CHAPTER - 6
मधुर-मधुर मेरे दीपक जल

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न क :

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(1).

प्रस्तुत कविता में 'दीपक' और 'प्रियतम' किसके प्रतीक हैं ?

उत्तर 1:

प्रस्तुत कविता में दीपक ईश्वर के प्रति आस्था का प्रतीक है तो प्रियतम अराध्य ईश्वर का प्रतीक है ।

(2).

दीपक से किस बात का आग्रह किया जा रहा है और क्यों ?

उत्तर 2:

दीपक से लगातार जलने का आग्रह इसलिए किया जा रहा है क्योंकि कवयित्री अपने प्रियतम अर्थात ईश्वर के आने के मार्ग को लगातार प्रकाशित रखना चाहती है ।

(3).

'विश्व–शलभ' दीपक के साथ क्यों जल जाना चाहता है ?

उत्तर 3:

विश्व शलभ दीपक के साथ इसलिए जलना चाहता है जिससे कि वह अपने को भी उसे प्रकाश का अंग बना सके ।

(4).

आपकी दृष्टि में 'मधुर मधुर मेरे दीपक जल' कविता का सौंदर्य इनमें से किस पर निर्भर है।

(क) शब्दों की आवृत्ति पर।

(ख) सफल बिंब अंकन पर।

उत्तर 4:

दोनों ही कविता का सौंदर्य बढ़ाने वाले हैं यदि शब्दों की आवृत्ति कविता की लयात्मकता बढ़ा रही है तो सफल बिंब अंकन कविता के प्रस्तुतिकरण को प्रभावी बना रहा है ।

(5).
कवयित्री किसका पथ आलोकित करना चाह रही हैं ?

उत्तर 5:

कवयित्री अपने आराध्य ईश्वर का पथ आलोकित करना चाह रही है ।

(6).
कवयित्री को आकाश के तारे स्नेहहीन से क्यों प्रतीत हो रहे हैं ?

उत्तर 6:

आकाश में तारों का धीरे–धीरे चमक हीन होते जाना इस बात का प्रतीक है कि उनकें अन्दर स्नेह अर्थात् प्रेम कम होता जा रहा है ।

(7).
पतंगा अपने क्षोभ को किस प्रकार व्यक्त कर रहा है ?

उत्तर 7:

पतंगा बार –बार दीपक की लौ का चक्कर लगाकर उसमें ही विलीन हो जाना चाहता है , मगर किस्मत से वह बार–बार बच जाता है इसलिए वह अपने सिर को बार –बार धुन रहा है । अर्थत् दीपक की लौ से टकराने की कोशिश कर रहा है ।

(8).
कवयित्री ने दीपक को हर बार अलग–अलग तरह से 'मधुर–मधुर, पुलक–पुलक, सिहर–सिहर और विहँस–विहँस' जलने को क्यों कहा है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 8:

कवयित्री चाहती है कि उसका आत्मा रूपी दीपक हर स्थिति में लगातार जलता रहे जिससे उसके प्रभु का पथ आलोकित रहे इसीलिए वह उसे 'मधुर–मधुर, पुलक–पुलक, सिहर–सिहर और विहँस–विहँस' जलने को कह रही है ।

(9).

नीचे दी गई काव्य–पंक्तियों को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक !
जलमय सागर का उर जलता,
विद्युत ले घिरता है बादल !
विहँस विहँस मेरे दीपक जल !

(क) 'स्नेहहीन दीपक' से क्या तात्पर्य है?
(ख) सागर को 'जलमय' कहने का क्या अभिप्राय है और उसका हृदय क्यों जलता है ?
(ग) बादलों की क्या विशेषता बताई गई है ?
(घ) कवयित्री दीपक को 'विहँस विहँस' जलने के लिए क्यों कह रही हैं ?

उत्तर क:

स्नेहहीन अर्थात बिना प्रेम के और दीपक के अर्थ में बिना तेल के

उत्तर ख:

कवयित्री ने सागर को जलमय इसलिए कहा है क्योंकि संसार एक सागर की तरह है और उसका जल संसार की व्याहारिकता की तरह है । जिस प्रकार व्यावहारिकता किसी काम नहीं आती केवल ईश्वर की भक्ति काम आती है ठीक उसी प्रकार सागर का जल भी किसी काम नहीं आता । लेकिन उसी सागर का जल भाप बनकर बादल बनकर ईश्वर की कृपा की तरह संसार को आनंद प्रदान करने वाला है इसीलिए बादल को देखकर सागर का दिल जलता है ।

उत्तर ग:

बादलों की यही विशेषता है कि वे बिना किसी भेदभाव के पूरे संसार को तृप्त करते हैं । जैसे ईश्वर करते हैं।

उत्तर घ:

कवयित्री दीपक को 'विहँस विहँस' जलने के लिए इसलिए कह रही हैं क्योंकि इसके द्वारा वह सभी के मन में ईश्वर के प्रति आस्था जगाना चाहती है ।

(10).

क्या मीराबाई और 'आधुनिक मीरा' महादेवी वर्मा इन दोनों ने अपने–अपने आराध्य देव से मिलने के लिए जो युक्तियाँ अपनाई हैं, उनमें आपको कुछ समानता या अंतर प्रतीत होता है? अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर 10:

महादेवी वर्मा के आराध्य निराकार ब्रह्म हैं । वह उनके प्रति पूरी तरह समर्पित हैं मगर उनके रूप का वर्णन नहीं किया है । इसके विपरीत मीराबाई के आराध्य सगुण ब्रह्म हैं जिन्हें वे अपने सखा , प्रेमी , पति के रूप में मानती हैं ।

प्रश्न ख:
निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए।

(1)
दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल गल !

उत्तर 1:
कवयित्री अपने आन्तरिक दीपक के प्रकाश को सागर की तरह विशाल बनाते हुए उसे पूरे संसार में फैलाना चाहती है।

(2).
युग–युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर !

. उत्तर 2:
कवयित्री के अनुसार दीपक लगातार , हर समय , हर क्षण जलता रहे ओर उसके प्रियतम भगवान का मार्ग प्रकाशवान बनाए रखे।

(3).
मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन !

. उत्तर 3:
मृदुल जिस प्रकार मोमबत्ती जब जलती है तो उसके अंदर का धागा भी जलता है ठीक उसी प्रकार उसका शरीर भी जलते हुए प्रकाश को फैलने में मदद करे।